International Journal of Scientific Research in Science, Engineering and Technology
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 (www.ijsrset.com)
doi : https://doi.org/10.32628/IJSRSET

Comparative Study of Learning Style of Students of Higher Secondary Level Towards Environmental Education

(उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का पर्यावरण शिक्षा के प्रति अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन)

कुसुम देवी (शोध-छात्रा)
शिक्षा शास्त्र विभाग नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय
कोटवा जमुनीपुर, प्रयागराज, उ.प्र.

Article Info
Volume 9, Issue 1
Page Number : 19-22
Publication Issue :
January-February-2022
Article History
Accepted : 05 Jan 2022
Published: 13 Jan 2022

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध पत्र 'उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का पर्यावरण शिक्षा के प्रति अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन' है। जिसके अंतर्गत उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययन कर रहे कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के छात्र-छात्राओं के अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस शोध में जनसंख्या का चयन यादृच्छिक विधि के द्वारा किया गया है जिसमें जनसंख्या के रूप में प्रयागराज जनपद के चार उच्च माध्यमिक विद्यालयों के 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया जिसमें 100 विद्यार्थी कला वर्ग एवं 100 विद्यार्थी विज्ञान वर्ग के सम्मिलित है। इसमें 100 छात्र एवं 100 छात्राओं को सम्मिलित किया गया है। शोध के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। शोधार्थिनी द्वारा प्रोफेसर के. एस. मिश्र द्वारा निर्मित अधिगम शैली मापनी का प्रयोग करके प्रदत्तो का संकलन किया गया। यह मापनी 6 अधिगम शैली का आकलन करती है। प्रदत्तो के विश्लेषण के लिए मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, टी-मान सांख्यिकी प्रविधि का प्रयोग किया गया। प्राप्त परिणामों से यह ज्ञात हुआ कि विभिन्न वर्ग के विद्यार्थियों द्वारा समान रूप से अधिगम शैली को अपनाया जाता है।

Keywords: उच्च माध्यमिक स्तर, पर्यावरण शिक्षा, अधिगम शैली आदि।

INTRODUCTION

प्रस्तावना : मनुष्य के सीखने की प्रक्रिया जन्म से ही प्रारंभ हो जाती है वह पैदा होते ही अधिगम या सीखना शुरू कर देता है जो उसके मृत्युपरांत तक चलती रहती है। सभी मनुष्यों में एक समान सीखने की क्षमता नहीं होती है सभी में अलग-अलग क्षमताये प्रकृति द्वारा प्रदान की जाती हैं। भिन्न-भिन्न मनुष्यों में अधिगम की क्षमताएं भी भिन्न-भिन्न होती हैं। अधिगम या सीखना जीवन के लिए एक आवश्यक क्रिया है जो शिक्षा के द्वारा सीखी जा सकती है। शिक्षा वह साधन है जिससे मनुष्य के सीखने की प्रक्रिया अनवरत चलती रहती है। अधिगम एक साध्य है तो मनुष्य उसका साधन है। बर्टन कहते हैं कि "शिक्षण अधिगम के लिए अभिप्रेरणा निर्देशन तथा प्रोत्साहन है अतः शिक्षण और अधिगम दोनों का उद्देश्य विद्यार्थी के व्यवहार में परिवर्तन लाना और उसके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना होता है। अतः शिक्षा द्वारा बालक का सर्वांगीण विकास तथा उनके व्यवहार में परिवर्तन अच्छे अधिगम तथा अनेक प्रकार की अधिगम शैली के द्वारा विकसित होती है। अधिगम शैली एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति अपने मन को एकाग्र करके क्रिया प्रारंभ कर सकता है तथा नई एवं कितनी भी जटिल समस्या हो उसके विषय में जानकारी को विभिन्न माध्यमों से स्थाई कर सकता है। इसी में कुछ अत्यंत प्रतिभाशाली बालक होते हैं जो बिना किसी अधिगम शैली का प्रयोग किए ही अच्छे तरीके से सीख लेते हैं जबकि कमजोर उपलब्धि वाले बालक किसी विशेष अधिगम शैली के साथ ही अच्छा प्रदर्शन कर पाते हैं। अरस्तु ने कहा है कि प्रत्येक बालक के पास एक विशिष्ट योग्यता एवं कुशलता होती है जिससे वह सीखता है और वह कुछ समय के उपरांत किशोरावस्था में अलग-अलग रूप से स्पष्ट दिखाई पड़ती है। सभी मनुष्यों के पास अधिगम या सीखने का तरीका अलग अलग होता है जो प्राय जैविक एवं अनुवांशिक गुणों तथा व्यक्तिगत अनुभव से प्रभावित होता है। उसी तरह छात्र जब सीखने का प्रयास करता है तो वह अपनी रुचि एवं स्वाभाविकता के साथ देखकर, सुनकर, प्रयोगकर, बोलकर, अनुभव करके सीखता है। अधिगम शैली वह मार्ग है जिसके

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

द्वारा मनुष्य अपना ध्यान विषय पर केंद्रित करता है तथा विभिन्न कौशलों को अपने मन मस्तिक में समाहित करता है। वह न तो भौतिक साधन है न विधियां है और न ही विशेष कौशल है। जिनका व्यक्ति सीखने में प्रयोग करता है। वह केवल अधिगम शैली है जो सीखने के साधन का कार्य करती है। जब किसी अधिगम के पीछे पर्यावरण के प्रति जागरूकता करवाई जाती है तो उसे पर्यावरण जागरूकता अधिगम शैली कहा जाता है और पर्यावरण स्वतंत्र अधिगम शैली में किसी अधिगम के पहले संरचना का निर्माण नहीं करती है। पर्यावरण शिक्षा का वह पहलू है जिससे संतुलन का मापदंड तैयार होता है। शिक्षा उपयोगी तथ्यों के संवाहक का कार्य करती है तो पर्यावरण उसके आगत व निर्गत का विकास करती है। इस तरह शिक्षा पर्यावरण के लिए और पर्यावरण शिक्षा के लिए अनिवार्य है। पर्यावरण शिक्षा और पर्यावरण दोनों विकास के लिए आवश्यक है, मनुष्य में अधिगम का विकास प्राकृतिक संसाधनों का बड़ी निर्ममता से अविवेकपूर्ण ढंग से शोषण को रोकता है। मानव समाज अपने अस्तित्व को खतरे में डाल दिया है, पर्यावरणीय समस्याओं का केवल प्रशासनिक स्तर पर निराकरण संभव नहीं है बल्कि इसमें जन सहभागिता की आवश्यकता है और यह तभी संभव है जब बालको को अधिगम या सीखने की प्रक्रिया को पर्यावरण से जोड़कर सिखाया या बताया जाएगा।

(2) समस्या कथन (Problem Statement)

पर्यावरण की जटिल समस्या को हल करने हेतु विद्यार्थियों को पर्यावरण शिक्षा से अधिगम शैली को जानने की अत्यंत आवश्यकता है।अतः विद्यार्थियों के अधिगम को ध्यान में रखते हुए शोध विषय "उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का पर्यावरण शिक्षा के प्रति अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन" करना है।

(3) उद्देश्य (Objective)

शोधार्थिनी द्वारा शोध अध्ययन के निम्न उद्देश्य बनाए गए हैं। (1) उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग और विज्ञान वर्ग के छात्रों में पर्यावरण शिक्षा के प्रति अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन करना। (2) उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग और विज्ञान वर्ग के छात्राओं में पर्यावरण शिक्षा के प्रति अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(4) परिकल्पना (Hypothesis)

शोध कोई भी हो उसके लिए परिकल्पना या कल्पना का होना अति आवश्यक होता है बिना परिकल्पना या कल्पना के शोध को अंतिम परिणति तक पहुंचाना कठिन होता है। परिकल्पना का निर्माण समस्या का संभावित समाधान होता है इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रख करके शोधार्थियों ने सोच उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया है। (1) उच्च माध्यमिक स्तर पर कला वर्ग और विज्ञान वर्ग के छात्रों में पर्यावरणीय शिक्षा के प्रति अधिगम शैली में कोई सार्थक अंतर नहीं है। (2) उच्च माध्यमिक स्तर पर कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के छात्राओं में पर्यावरणीय शिक्षा के प्रति अधिगम शैली में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

(5) शोध विधि (Research Method)

शोधार्थिनी द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु वर्णनात्मक विधि के अंतर्गत आने वाली सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।

(6) न्यादर्श (Sample)

शोध के लिए किसी भी शोधकर्ता को सभी व्यक्तियों का अध्ययन करना कठिन होता है अतः शोधकर्ताओं द्वारा कुछ व्यक्तियों का चयन किया जाता है। इस शोध विषय में भी शोधार्थिनी द्वारा प्रयागराज जनपद के 4 विद्यालयों के 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया है जिसमें 100 छात्र एवं 100 छात्राएं हैं, इसमें 100 विद्यार्थी कला वर्ग के तथा 100 विद्यार्थी विज्ञान वर्ग के हैं। विज्ञान वर्ग के 100 विद्यार्थियों में 50 छात्र एवं 50 छात्राएं हैं तथा कला वर्ग के 100 विद्यार्थियों में 50 छात्र एवं 50 छात्राएं हैं शोधार्थिनी द्वारा प्रस्तुत शोध हेतु न्यादर्श का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन विधि के अंतर्गत लॉटरी विधि के द्वारा किया गया है।

(7) उपकरणों का चयन (Equipment Selection)

शोध के लिए उपकरणों का चयन अति महत्वपूर्ण होता है इसके द्वारा ही शोध के चरो का सही मापन किया जा सकता है। अतः प्रस्तुत शोध में चरों के मापन के लिए शोधार्थिनी द्वारा प्रोफेसर के. एस. मिश्रा द्वारा निर्मित अधिगम शैली मापनी का प्रयोग संकलन के लिये किया गया है। इस मामले में कुल 42 कथन दिए गए हैं जो अधिगम शैली मापनी से छह प्रकार की अधिगम शैली का मापन करते हैं जो निम्नवत है। (1) सक्रिय पुनरूत्पादन(ER) (2) सक्रिय रचनात्मक (EC) (3) चिंतात्मक पुनरूत्पादन (FR) (4) चिंतात्मक रचनात्मक (FC) (5) मौखिक पुनरूत्पादन (VR) (6) मौखिक रचनात्मक(VC) इस मापनी मे अधिगम के व्यवहार के लिए 5 प्रतिक्रिया विकल्प दिए गए हैं जो बहुत ज्यादा, बहुत, सामान्य, कम और बहुत कम हैं। इनके लिए क्रमशः 5,4,3,2 एवं 1 अंक प्रदान किए जाएंगे इस मापनी में कुल 42 प्रश्न है जिसमें निम्नतम 42 और अधिकतम 210 अंक प्रदान किए जा सकते हैं। अधिगम शैली मापनी की वैधता को रचनात्मक एवं आंतरिक मे बाटा गया है जिससे अधिगम शैली अधिक विश्वसनीय और वैध है।

(8) उपकरणों का प्रशासनीकरण (Administration of Equipment)

प्रस्तुत शोध के लिए सर्वप्रथम विद्यालयों का चयन किया गया इसके बाद चयनित विद्यालयों के प्राचार्य से अनुमति मांगी गई अनुमति मिलने के बाद प्रदत्तो का एकत्रीकरण उपकरणों की सहायता से किया गया। प्रदत्तो को एकत्र करने के लिए प्रयोग की जाने वाली मापनी देने से पूर्व छात्रों को बताया गया कि अधिगम शैली का मापनी करने के लिए अधिगम शैली मापनी को किस प्रकार से प्रयोग करना है। आप जो उत्तर बताएंगे उसका प्रयोग सिर्फ शोध कार्य के लिए किया जाएगा अधिगम शैली मापनी की एक-एक कॉपी छात्रों में वितरित की गई। छात्रों को समय बताया गया तथा मापनी देने से पूर्व सभी प्रकार के निर्देश शोधार्थिनी द्वारा मौखिक रूप से छात्रों को बताए गए इसके बाद निर्धारित समय में छात्रों से मापनी वापस प्राप्त की गई। यही प्रक्रिया सभी विद्यालयों में अपनाई गई और प्रदत्तो का संकलन किया गया।

(9) प्रयुक्त सांख्यिकी विधियां (Statistical Methods Used)

शोध अध्ययन के आंकड़ों का विश्लेषण के लिए शोधार्थी को एक प्रमुख जिम्मेदारी संग्रहित आंकडो से परिकल्पना के विषय में संभावनाओं का पता लगाना होता है, केवल आंकड़ों के विश्लेषण मात्र से निष्कर्ष तक नहीं पहुंचा जा सकता है इसके लिए किसी ने किसी प्रकार की साख्यिकीय विधि की आवश्यकता होती है। अतः

शोधार्थिनी द्वारा इस शोध अध्ययन के आंकड़ों का विश्लेषण करने के लिए मध्यमान, मानक विचलन, टी-मान आदि सांख्यिकीय प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

(10) परिणाम एवं निष्कर्ष (Results and Conclusions)

शोध को पूर्ण तब माना जाता है जब परिणाम और निष्कर्ष सही हो, इसके अभाव में शोधकार्य अपूर्ण होता है। इसके लिए शोधकर्ता को सावधानी बरतनी पड़ती है क्योंकि आंकड़ों का विश्लेषण के बाद ही परिणाम और निष्कर्ष शोध का प्रमुख अंग हो जाता है। शोधार्थिनी द्वारा इस शोध में उद्देश्यो के आधार पर निम्नलिखित परिणाम और निष्कर्ष प्राप्त किए गए है। परिकल्पना संख्या(01) उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग और विज्ञान वर्ग के छात्रों में पर्यावरण शिक्षा के प्रति अधिगम शैली में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इसके लिए प्रदत्तो का विश्लेषण करके व्याख्या करने के लिए मध्यमान, मानक विचलन, और टी-मान निकाला गया। जिसे तालिका संख्या एक में दिया गया है।

तालिका संख्या -01

क्र.सं.	**चर**	**न्यादर्श**	**मध्यमान**	**मानक विचलन**	**टी-मान**	**निष्कर्ष**
1	**कला वर्ग**	50	161.30	15.30		
2	**विज्ञान वर्ग**	50	158.98	11.19	0.133	**सार्थक** अंतर नहीं है

परिकल्पना एक की तालिका संख्या एक के अनुसार उच्च माध्यमिक स्तर पर कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के छात्रों में पर्यावरण शिक्षा के प्रति अधिगम शैली में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि पर्यावरण शिक्षा के प्रति अधिगम शैली का स्तर कला वर्ग और विज्ञान वर्ग के छात्रों में समान पाया गया है।

परिकल्पना संख्या (02)

उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग और विज्ञान वर्ग के छात्राओं में पर्यावरण शिक्षा के प्रति अधिगम शैली में कोई सार्थक अंतर नहीं है। परिकल्पना के प्रदत्तो का विश्लेषण करने के लिए मध्यमान, मानक विचलन और टी-मान निकाला गया। जिसका परिणाम तारिका संख्या दो में दिया गया है।

तालिका संख्या -02

क्र.सं.	**चर**	**न्यादर्श**	**मध्यमान**	**मानक विचलन**	**टी-मान**	**निष्कर्ष**
1	**कला वर्ग**	50	162.5	12.27		
2	**विज्ञान वर्ग**	50	161.89	8.80	0.189	**सार्थक अंतर नही है**

परिकल्पना संख्या दो मे सारिणी संख्या दो का विश्लेषण करने के बाद उच्च माध्यमिक स्तर पर कला वर्ग और विज्ञान वर्ग की छात्राओं में पर्यावरणीय शिक्षा के प्रति अधिगम शैली में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अत: निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि पर्यावरणीय शिक्षा के प्रति अधिगम शैली का स्तर कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं में समान है।

(11) निष्कर्ष (Conclusion)

कला वर्ग और विज्ञान वर्ग का अधिगम शैली पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया जिसका कारण यह हो सकता है कि सभी का पाठ्यक्रम एक समान है। वर्गों की एक दूसरे से संबंधित होना भी महत्वपूर्ण है। हाई स्कूल स्तर तक सभी विद्यार्थी सभी विषयों का एक समान अध्ययन करते हैं तथा विभिन्न विधियों द्वारा सीखने का उनको मौका मिलता है इसके लिए विशिष्ट विषय का चयन करने से उनकी अधिगम शैली पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। छात्रों मे अपनी अपनी प्राकृतिक क्षमता के अनुसार अधिगम की योग्यता का विकास होता रहता है जो वातावरण तथा सीखने के माध्यमों पर निर्भर करता है।

(12) आगामी शोध हेतु सुझाव (Suggestions for Future Research)

आगामी शोध हेतु निम्नलिखित सुझाव है। (1) आगामी शोध में और अधिक न्यादर्श पर शोध किया जा सकता है। (2) विश्वविद्यालय स्तर के विभिन्न वर्गों के विद्यार्थियों पर पर्यावरण शिक्षा के प्रति अधिगम शैली का अध्ययन किया जा सकता है। (3) ग्रामीण और शहरी छात्रों पर अधिगम शैली के प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है। (4) B.ed और बीटीसी के छात्रों में पर्यावरण शिक्षा के प्रति अधिगम शैली का अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ (Reference)

[1]. मिश्र, अमृता (1998), देवी अहिल्या विश्वविद्यालय शिक्षा संस्थान के छात्रों की अधिगम शैली का अध्ययन, M.Ed लघु शोध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर

[2]. गोपाल, डॉ. एम.के.(2008), पर्यावरण शिक्षा, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर,

[3]. गुप्ता, डॉ.एस.पी. एंड गुप्ता, डॉ. अलका (2008), साख्यिकीय विधियां, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन पब्लिकर्स एंड डिसटीब्यूटर्स।

[4]. जैन, डा. एम.के.(2007), शोध विधियां, नई दिल्ली, दिल्ली विश्वविद्यालय पब्लिकेशन।

[5]. गुप्ता, डॉक्टर यू.सी. (2008), पर्यावरण शिक्षा, नई दिल्ली, के. एस. के. पब्लिकर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स।

[6]. राय, डॉ बी.के. (1990), शिक्षा के मापन मूल्यांकन एवं सांख्यिकी, नई दिल्ली, श्री पब्लिकेशन।

[7]. शर्मा, मुरारी लाल (1991), पर्यावरण, प्रभा पर्यावरण विभाग, राजस्थान।

[8]. प्रसाद, डॉ गायत्री एंड नौटियाल, डॉ. राजेश (2008), पर्यावरण अध्ययन, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।

[9]. रायजादा, डॉ. बी.एस. एण्ड वर्मा डॉ. वंदना (2008), शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व, जयपुर राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।

[10]. ओसवाल, प्रोफेसर एम. एल. व अन्य (1994), साख्यिकी विधियां, रमेश बुक डिपो जयपुर।

[11]. कपिल, डॉक्टर एस. के. ,अनुसंधान विधियां, भार्गव बुक डिपो हाउस, आगरा।

[12]. कौल, लोकेश (2009), शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, नोएडा, विकास पब्लिशिंग हाउस।

[13]. बाना, डॉक्टर बी. एण्ड डॉ. राजीव (2005), पर्यावरण शिक्षा, जयपुर रिसर्च पब्लिकेशन।

[14]. बुच, एम.वी. (1993), थर्ड सर्वे इन एजुकेशन, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद।

[15]. Friedman, P. and Alley,R.(1984), Learning Teaching Styly : Applying the Principles, Therory into Practice 23(1), 16. Curry, L. (1990), Learning Styly in Secondary Schools, A Review of Instruments and implications for their Use , ERIC Documents Reproduction .